अध्याय 21

हमारी सांस्कृतिक विरासत

संस्कृति क्या है?

किसी भी देश की संस्कृति उसकी अपनी आत्मा होती है, जो उसकी सम्पूर्ण मानसिक पहचान को सूचित करती है। यह किसी एक व्यक्ति या राजा के सुकृत्यों तथा सुकार्यों का परिणाम मात्र नहीं होती है अपितु अनगिनत ज्ञात व अज्ञात व्यक्तियों के निरंतर चिन्तन, दर्शन, कार्य, परम्पराओं का परिणाम होती है। मानव द्वारा सृजित कला, शिल्प, स्थापत्य, साधना, संगीत नृत्य, वैयक्तिक जीवन के नियम, आस्था आदि विषय भी संस्कृति के अन्तर्गत आते हैं। देश और काल में संस्कृति के स्वरूप में मानवीय प्रयत्नों से बदलाव आते रहे, और इस प्रकार संस्कृति का विकास होता रहा।

पिछले अध्यायों में हमने राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं के बारे में पढ़ा। इस अध्याय में प्राचीनकाल में कला, शिल्प, स्थापत्य और साहित्य के बारे में जानेंगे।

स्तूप– स्तूप बहुत प्राचीन समय में बनाए जाते थे। अस्थियों के ऊपर मिट्टी एवं ईंटों आदि से बनाए जाने वाले अर्द्ध –गोलाकार टीले को स्तूप कहा जाता है। श्रेष्ठ भिक्षुओं के सम्मान में स्तूप बनवाए जाते थे। स्तूप का शाब्दिक अर्थ होता हैं–टीला।

स्तूप

कहते हैं कि शाक्य मुनि गौतम बुद्ध ने अपने शिष्यों को कहा था कि उनके अवशेषों को स्तूप में रखा जाए। बुद्ध के अवशेषों को आठ भागों में बाँट कर आठ अलग–अलग स्थानों पर स्तूप बना कर रखा गया। स्तूप में एक धातु मंजुषा में बुद्ध अथवा बौद्ध भिक्षुओं के अवशेषों को रखकर मिट्टी के टीले में गाड़ दिया जाता था। स्तूप साधारण स्मारक न होकर पूजा स्थल के रूप में पवित्र स्थान होता है।

शुरू में हो सकता है स्तूप महज एक टीला मात्र हो, पर कालान्तर में इसका आकार ईंट अथवा पत्थरों से बड़ा बनाया जाने लगा। इसके ऊपर छत्र लगा दिया गया। चारों तरफ परिक्रमा के लिए 'वेदिका' बनाकर प्रदक्षिणा पथ का निर्माण किया गया। गलियारे को प्रतिमाओं से सजाया जाने लगा।

वर्तमान में आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर अमरावती शहर में 'अमरावती' नाम से श्वेत पाषाण (संगमरमर) से निर्मित एक प्रसिद्ध स्तूप है। मध्यप्रदेश में साँची का महास्तूप भी बहुत प्राचीन है। साँची का महास्तूप अपने स्थान पर आज भी स्थित है, किन्तु भारहुत स्तूप के अवशेष भारतीय संग्रहालय कोलकाता में स्थापित है।

चैत्य और विहार– पहाड़ों पर कई गुफाओं का निर्माण किया गया था, जिनमें से कुछ गुफाओं में

पूजा हेतु ठोस पाषाण स्तूपों का निर्माण किया गया। ऐसे पूजा स्थल को चैत्य कहा गया है। कुछ गुफाओं का इस्तेमाल भिक्षुओं के रहने के लिए भी होता था, ऐसी गुफाओं को विहार कहते हैं। विहार दो अथवा तीन मंजिला होते थे। विहार में ठहरने के अलावा भिक्षु पढ़ाई करते, ध्यान करते, अनेक विषयों पर विचार–विमर्श करते थे। इनके बारे में आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके है। ये गुफाएँ कार्ले, भाजा, अजन्ता, ऐलोरा और कन्हेंरी में देखने को मिलती है। स्तूप, चैत्य और विहार की दीवारों को मूर्तियों व चित्रों से सुसज्जित किया गया है। इन मूर्तियों एवं चित्रों के विषय बुद्ध के जीवन की घटनाएँ एवं बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक कथाएँ) हैं। गुफाओं में स्वतंत्र रूप से कहीं–कहीं पशु–पक्षी व प्रकृति का अलंकरण भी किया गया है। स्तूप निर्माण में राजा, श्रेष्ठि, व्यापारी और अन्य लोग दान देते थे और उनके नामों को भी पत्थर पर उत्कीर्ण किया गया है।

साँची का स्तूप

चैत्य

अजन्ता की गुफाओं का विहंगम दृश्य

अजन्ता की गुफाएँ

अजन्ता की गुफाओं में प्राचीन स्थापत्य, शिल्प और चित्रकला के बेहतरीन उदाहरण देखने को मिलते हैं। महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में बाघोरा नदी की घाटी में पहाड़ काट कर दूसरी सदी ईसा पूर्व में

ये गुफाएँ बनी है। हर गुफा से नीचे नदी तक जाने के लिए सीढ़ी काटी गई है। यहाँ कुल 29 गुफाएँ हैं, इनमें से पाँच गुफाएँ पूजा स्थल 'चैत्य' हैं और बाकी गुफाएँ भिक्षुओं के रहने के लिए 'विहार' है। 490 ईस्वी के बाद अजंता की गुफाओं को त्याग दिया गया। ऐसा लगता है मानो अजंता का इस्तेमाल करने वाला सारा समुदाय यह स्थान छोड़ कर ऐलोरा चला गया। ऐलोरा (स्थानीय भाषा में वेल्लूर) उस समय के प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर था।

चैत्य गुफा कार्ले

अजंता की एक गुफा का प्रवेश द्वार

अजंता में चित्र बनाने की विधि

अजंता के भित्ति चित्रों के निर्माण के लिए पहले पहाड़ की खुरदरी दीवार को तैयार किया जाता था। इसके लिए खड़ियाँ, गोबर, बारीक बजरी का गारा, चावल की भूसी, उड़द की दाल के छिलके, अलसी को पानी में कई दिनों तक मिलाकर सड़ाया जाता था। इन सभी को मिलाकर, पीसकर पलस्तर हेतु गाढ़ा लेप तैयार कर दीवार पर एक इंच मोटा पलस्तर कर दिया जाता था। इसके ऊपर अण्डे के छिलके के मोटाई के बराबर सफेद चूने का घोल चढ़ाया जाता था। इसके बाद लाल रंग की रेखाओं से कच्चा चित्र बनाकर उसमें रंग भर दिया जाता था। चित्र में रंग भर देने और काली रेखाओं से पक्का चित्र बन जाने के बाद उसे कन्नी से पीटा जाता था, जिससे रंग दीवार की गहराई तक बैठ जाता। तत्पश्चात् पूरे चित्र को चिकने पत्थर से

अजंता गुफाओं के प्रवेश द्वार की छत पर चित्रकारी

घोटकर पॉलिश की जाती। इस विधि को फ्रस्को (भित्ति चित्र) कहा जाता है।

अजंता की गुफाओं में बने चित्र दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ की चित्र परम्परा ने पूर्वी एशिया में जावा, सुमात्रा, मलेशिया, श्रीलंका, चीन आदि की चित्र परम्परा को बहुत प्रभावित किया।

अजंता गुफाओं के भीतर चैत्यों में निर्मित स्तूपों पर बुद्ध के चित्रों और बुद्ध के समय की अनेक कथाओं को चित्रित किया गया है। इनके साथ बचे रिक्त स्थानों को पुष्पीय अलंकरण अथवा पशु–पक्षी की आकृतियों से सजाया गया।

अजंता गुफा में बुद्ध निर्वाण की मूर्ति

यह भी जानें –हिन्दुस्तान में मूर्तिकला के निर्माण का आरम्भ सिंधु– सरस्वती सभ्यता से प्राप्त मृणशिल्पों एवं धातु और पाषाण निर्मित प्रतिमाओं से होता है। भारतीय मूर्तिकला का वास्तविक स्वरूप मौर्यकाल से शुरू होता है।

पत्थर तराश कर मूर्तियाँ बनाने की कला हड़प्पा की सभ्यता में मौजूद थी, यह हम पहले देख चुके हैं। सम्राट अशोक के समय में सारे मौर्य साम्राज्य में पत्थर तराश कर अलग–अलग स्थानों पर शिलालेख रखे गए, जिनमें साम्राज्य की व्यवस्था के बारे में सम्राट के विचारों का उल्लेख था। लगता है कि ये शिलालेख सम्राट द्वारा लोगों तक अपनी बात पहुँचाने का माध्यम था।

इसी तरह मौर्य काल में ही अनेक स्थानों पर पत्थर के स्तम्भ (लाट) खम्भे खड़े किए गए, जिन पर सम्राट का संदेश होता था। कई स्तम्भों पर पशुओं जैसे सिंह, बैल, घोड़ा, हाथी की बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बलुआ पत्थर से बनती थी। सारनाथ की लाट एवं महरौली का लौह स्तम्भ तत्कालीन कला के अभूतपूर्व उदाहरण हैं। सारनाथ से जो अशोक स्तंभ मिला उसके शीर्ष पर चार सिंह पीठ सटाये बैठे हुए हैं। उसके शीर्ष भाग पर उत्कीर्ण सिंह इतने आकर्षक और सुन्दर हैं कि उसे भारत के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में स्वीकार किया गया है। इस स्तम्भ के सिरे पर चार शेर चारों दिशाओं की ओर मुँह किए बैठे हैं, जो राष्ट्र की शक्ति व शौर्य के प्रतीक

डाक टिकिट

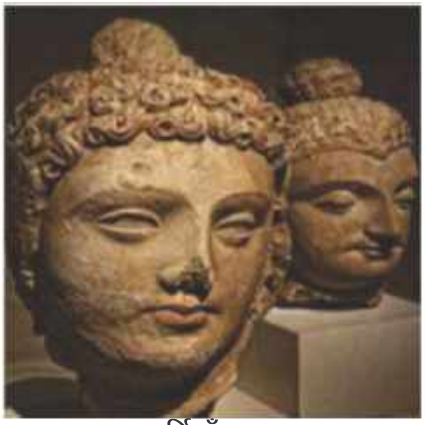

मूर्तियाँ

अशोक स्तंभ

है। इनके नीचे गोलाकार चौकी है, उस पर उभारदार चक्र बैल, घोड़ा, हाथी, शेर की आकृतियाँ बनाई गई है। अशोक स्तम्भ का यह शीर्ष दुनिया की मूर्तिकला में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। स्तम्भों और मूर्तियों पर ओपदार पॉलिस की गई है।

इसी प्रकार इस काल में स्वतन्त्र मूर्तियाँ भी बनी हैं, उनमें पाटलिपुत्र के समीप दीदार गंज की चँवर–धारिणी स्त्री की मूर्ति, पटना व परखम से प्राप्त यक्ष, लोहानुपुर से प्राप्त मानव धड़, मौर्यकालीन शिल्प कला वैभव आदि प्रमुख उदाहरण है।

कुषाण काल में सर्वप्रथम बुद्ध की मानव रूप में मूर्तियाँ बनी, जो भारतीय कला को इस युग की सर्वोत्तम देन हैं। इस काल की कला के गान्धार व मथुरा मुख्य केन्द्र थे। गान्धार व मथुरा में बौद्ध तथा हिन्दू देवी–देवताओं, जैन तीर्थंकरों, शिव के दो रूप यथा एकलिंग व दूसरा मानव रूप के साथ–साथ कृष्ण–बलराम, कार्तिकेय, इन्द्र, सूर्य, लक्ष्मी, सरस्वती आदि की मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। यहाँ यक्ष–यक्षिणी की मूर्तियाँ भी बनी हैं।

गान्धार मूर्तिकला के शिल्पकार यूनानी थे, लेकिन उनकी कला का आधार भारतीय विषय थे। गान्धार मूर्तिकला में बुद्ध की मूर्तियों के सिर पर घुंघराले जूड़े में बंधे हुए बाल और प्रभामण्डल उकेरा गया है। इन मूर्तियों में वस्त्रों में पारदर्शिता एवं सलवटों का यथार्थ प्रभाव आया है।

गुप्तकाल में चित्रकला, मूर्तिकला व मन्दिर निर्माण कला के अनके प्रमाणित शास्त्रों की रचना हुई। इस काल की मूर्तिकला भारतीय तत्वों से ओतप्रोत थी। इस काल में तीन प्रमुख धर्मों, हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म की अनके मूर्तियाँ बनाई गई है।

इस काल में बनी मूर्तियों में हिन्दू धर्म से संबंधित शेषनाग, शैया पर विश्राम करते हुए विष्णु (देवगढ़ मन्दिर, झाँसी उत्तर प्रदेश में), शिव–पार्वती, त्रिमूर्ति आदि प्रमुख हैं। सारनाथ स्थित धर्म चक्र प्रवर्तन की मुद्रा में पद्मासन्न बुद्ध की प्रतिमा तथा अनेक जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ इस काल में निर्मित हुई हैं। भारतीय कला को इतिहास में इस काल को स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है।

साहित्य

कहानी, काव्य आदि साहित्य में गिने जाते है। वैदिक साहित्य के बारे में हम पहले ही जान चुके हैं कि इन्हें पढ़ा नहीं जाता था बल्कि इन्हें बोला और सुना जाता था और इसी रूप में नई पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जाता था। इनको सही उच्चारण के साथ अगली पीढ़ी को संप्रेषित किया जाता था। साहित्य लिखने का प्रारम्भ चौथी सदी ईस्वी में शुरू होता है।

प्राचीन भारत का साहित्य कई तरह का था। कुछ धर्म से संबंधित था जैसा कि वैदिक साहित्य, कुछ में धर्म को लेकर कहानियाँ थी जैसे कि जातक–कथाएँ, जिनके बारे में पहले जान चुके है कि ये बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ हैं। अनेक काव्य और कथाएँ धर्म के अलावा भी थी, जो पुरानी यादों को ताजा करती थी।

पता करें–

स्वतंत्र भारत में प्रकाशित होने वाली पहली डाक टिकट कौन सी थी, जिसमें राष्ट्रीय चिन्ह के प्रतीक को दर्शाया गया है ?

रामायण'' और 'महाभारत' प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित ''रामायण'' में अयोध्या के राजकुमार श्रीराम के साहसिक कार्यों एवं उनके मर्यादा पुरुषोत्तम जीवन की महागाथा है। श्रीराम के जीवन की कथा हिन्दुस्तान के अलावा पूर्वी एशिया में भी फैली। आज भी श्रीराम की कथा हिन्दुस्तान के कोने–कोने के साथ संपूर्ण पूर्वी एशिया व विश्व के विभिन्न भागों में सुनी व मंचित की जाती है। महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित 'महाभारत' में कुरु परिवार के बीच लड़े गए युद्ध से संबंधित गाथा है। महाभारत में ही कुरुक्षेत्र के युद्ध मैदान में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए महान् संदेश जो आज भी प्रासंगिक हैं, 'भगवत्गीता' के रूप में संगृहीत है।

हम अगली कक्षाओं में हम जानेंगे कि किस तरह गीता में भक्ति धारा का स्रोत निहित है। दक्षिण के मदुरै शहर में तमिल भाषा के साहित्य को 'संगम' साहित्य कहा जाता है। यह साहित्य आज भी जीवंत है। संस्कृत में गुप्त काल में कवि कालिदास ने अनेक काव्यों की रचना की थी। उनके नाटक जैसे–'अभिज्ञान शाकुंतलम्' आज भी खेले जाते हैं। कालिदास ने अपने काव्यों में संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं का इस्तेमाल किया है। उच्च वर्ग के शिक्षित पात्र संस्कृत बोलते थे व बाकी प्राकृत। इससे इतिहासकार यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अब तक भारत में गैर संस्कृत प्राकृत भाषाओं का काफी प्रचार हो गया था। कालान्तर में इन्हीं प्राकृत भाषाओं से हमारी वर्तमान भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

भरत का 'नाट्यशास्त्र' इस काल की प्रमुख रचना है, जो नाट्य नर्तन, अभिनय, संगीत आदि कलाओं की जानकारी देता है। इसी काल में 'विष्णु–धर्मोत्तर पुराण' जैसे बहु–उपयोगी ग्रंथ की रचना हुई।

प्राचीन काल के प्रमुख साहित्यकार और उनकी रचनाएँ–

विष्णु शर्मा	:	पंचतंत्र
कालिदास	:	अभिज्ञान शांकुतलम्, मेघदूत, ऋतुसंहार, कुमारसंभव
क्षुद्रक	:	मृच्छकटिकम्
अमरसिंह	:	अमर कोश
सम्राट हर्ष	:	रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका
बाणभट्ट	:	हर्षचरित
इलांगरे आदिगल	:	सिल्पादिकरम् (तमिल)
सीतलै सत्तनार	:	मणिमेखलई (तमिल)

विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में भी भारत का प्राचीन साहित्य अत्यन्त उन्नत था। आयुर्वेद का ग्रंथ चरक ने लिखा था, जो महान् चिकित्सक था। इसमें दवाओं और बीमारी के इलाज के बारे में वर्णन है। इसी तरह सुश्रुत संहिता में संकलित शल्य चिकित्सा संबंधी जानकारी संगृहीत है। आठवीं सदी में सुश्रुत संहिता को अरबी में अनूदित किया गया। इस तरह से हिन्दुस्तान में पनपा चिकित्सा संबंधी ज्ञान अरब प्रदेशों में भी पहुँचा और अरबों के माध्यम से यूरोप में पहुँचा।

ताड़ पत्र पर लिखा तमिल साहित्य

आर्यभट्ट– आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ 'आर्यभट्टीय' में खगोल शास्त्र के बारे में बताया है जो भारत के खगोल विज्ञान की महानता को दर्शाता है। सबसे पहले 'आर्यभट्टीय' में यह बताया गया है कि पृथ्वी गोल है और पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, साथ ही यह भी बताया गया कि ग्रहण के समय पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। आज भी खगोल–शास्त्री उनके द्वारा दिए गए सिद्धान्तों को प्रामाणिक मानते हैं।

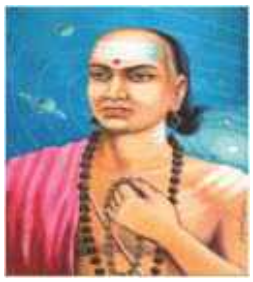

आर्यभट्ट

बौद्ध ग्रंथ

1. विनय पिटक (भिक्षुओं हेतु नियमों का संग्रह)	2. सुत्त पिटक (बुद्ध की शिक्षाएँ)	3. अभिधम्म पिटक (दर्शन व सांसारिक ज्ञान के विषय)

शब्दावली

प्रदक्षिणा पथ	–	परिक्रमा लगाने का रास्ता
बौद्ध भिक्षु	–	बौद्ध संत
अनूदित	–	अनुवाद किया हुआ

अभ्यास प्रश्न

1. स्तूप निर्माण में होने वाला खर्च कौन वहन करता था ?
2. अजंता की गुफाएँ कौनसी नदी–घाटी के पहाड़ को काट कर बनाई गई थी ?
3. स्तूप किसे कहते हैं ?
4. अमरावती का स्तूप कहाँ स्थित है ?

5. जातक कथाएँ किससे संबंधित है ?
6. विहार किसे कहते हैं ?
7. आर्यभट्टीय ग्रन्थ की रचना किसने की ?
8. चरक ने किस ग्रंथ की रचना की ?
9. स्तूप की संरचना के बारे में वर्णन कीजिए।
10. प्राचीन काल के साहित्य के बारे में लेख लिखिए।
11. भाग 'अ' को भाग 'ब' से सुमेलित कीजिए :–

भाग 'अ'	भाग 'ब'
1. जातक कथाएँ	नाच।
2. संगम साहित्य	नाटक।
3. शैया	बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ।
4. नाट्य	तमिल भाषा में रचा साहित्य ।
5. नर्तन	बिछौना।

गतिविधि

1. हमारे राष्ट्रीय चिन्ह का उपयोग कहाँ–कहाँ होता है ? सूची बनाइए ।
2. कुछ जातक कथाओं का संकलन कीजिए एवं अपने मित्रों को सुनाइये ।